अध्याय चौथा

"भूमिजा" में पात्र योजना

अध्याय चौथा

"भूमिजा" में पात्र योजना

कविवर नागार्जुन द्वारा लिखित "भूमिजा" एक सफल कृति है। "रामायण" के विख्यात कथानक से प्रेरित होकर उनमें से कुछ महत्वपूर्ण प्रसंगों से प्रेरित होकर उनमें से कुछ महत्वपूर्ण प्रसंगों को - जो राजनीति से परे है, अपने अंदाज से निरूपित किया है। इस सफल खंडकाव्य कृति में सीता, राम, लक्ष्मण, कुश और लव, वाल्मीकि, विश्वामित्र, गौतम, अहल्या, त्रिजटा , धन्वन्तरि, भागीरथ और सगर आदियों के चरित्र उजागर हुए हैं।

1· सीता :-

"भूमिजा" काव्य की नायिका है सीता। सीता को हम तीसरे प्रसंग से देखते है, जब श्रीराम लंका-विजय प्राप्त करते हैं तथा वनवास की चौदह वर्ष पूरे कर अयोध्या वापस आकर राजगद्दी पर बैठते है। सीता को अयोध्या नगरी कभी भी रास नहीं आयी। भूमिजा सीता के चरित्र के कुछ पहलू दृष्टव्य है -

अग्नि परीक्षा :-

रावण की पराजय के बाद राम के शिबिर में आने पर सीता को अपनी पवित्रता प्रमाणित करने के लिए अग्नि परीक्षा देनी पडी। अपने आप को इस प्रकार से केवल लोक मर्यादा के लिए प्रस्तुत करना उसे बुरा लगा, फिर भी वह चुप रही।

पुनः वनवास :-

श्रीराम बडी निष्ठा से प्रजा के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने लगे। एक दिन दूत ने राम को बताया कि सीता के चरित्र पर एक धोबी ने उंगली उठायी है। प्रजाहितैषी राम ने सीता को पुनः वनवास दे दिया।

गर्भवती :-

श्रीराम ने सीता को ऐसे समय बन भेज दिया जब वह माँ बनने वाली थी। अपनी असहाय अवस्था में भी सीता ने वन में सजा काटने का निश्चय इसीलिए किया था कि वह अपने बच्चों को जन्म दे सके। महामुनि वाल्मीकि के आश्रम में उसे सहारा मिला यहीं पर उसने लव-कुश जैसे सुषमा जुडवाँ बच्चों को जन्म दिया।

आत्म-मर्यादा तथा स्वाभिमान :-

सीता रघुकुल के एकपक्षीय मर्यादा और न्याय के प्रति नारी सुलभ आक्रोश व्यंग्यपूर्ण शब्दों में व्यक्त करती है। उसका स्वाभिमान बोलता है कि आखिर वह बार-बार अपनी पावनता, अपनी चारित्रिक शुध्दता के पक्ष में सफाई क्यों दे? इतिहास में अपना नाम-कीर्ति, यशोगान हासिल करने के लिए हम प्रजाहितैषी भले ही बनना चाहे उसे क्या लेना-देना? उसके साथ अन्याय किया गया था, उसे तुच्छ समझा गया। इसीलिए सीता आत्म-सम्मान के साथ अपने बेटों सहित महामुनि वाल्मीकि के आश्रम मे रहना पसंद करती है।

आदर्श माता :-

श्रीराम ने जब सीता को वनवास भेज दिया तब वह माँ बननेवाली थी। अपने चरित्र पर कलंक लगने के कारण वह मर जाना बेहतर मानती थी। रघुकुल की निशानी को जन्म देने का विचार उसे जीवित रखता है। सीता ने महामुनि वाल्मीकि के आश्रम में सहारा पाया और वहाँ उसने दो जुडवाँ बेटों को जन्म दिया। सीता ने लव-कुश को न सिर्फ जन्म दिया, अपितु उन पर अच्छे

संस्कार किये। उन्हें वीर धनुर्धर तथा साहसी शूर वीर बनाया। लव भील बालकों के साथ घने जंगल में निर्भय घूमता तथा न जाने कितनी बार वह बाघ के बच्चे पकडकर लाता और फिर उन्हें छोड़ आता। दूसरी ओर कुश कम बोलता, शांत, गंभीर रहता। दोनों में तुरंत बात समझ लेने की अद्भुत क्षमता थी। महामुनि ने उन्हें अस्त्र-शस्त्र में निपुण बनाया, काव्य-गायन करना, तीर चलाने का अभ्यास, विधा अध्ययन और ब्रहमचर्य का जीवन इन सभी में सीता ने उन्हें माहिर बनाया।

जन्म रहस्य :-

वन के एकांत में बैठे सीता को अपने जन्म की कथा याद आने लगी। बचपन में उसकी धाई ने दस बार उसे बताया था कि तू किसी के गर्भ से पैदा नहीं हुई थी। नदी के किनारे आम के बगीचा वाले खेत में एक हलवाहा हल चला रहा था। अचानक बैल रूक गये। उसने नीचे झुककर देखा तो हल की नोक से ठक्कन से ठका एक ठोस घडा निकला। उसी घडे से सीता निकली। वह भूमि से जन्मी भूमिजा अर्थात धरती की बेटी है। धरती उसके लिए माँ, बाप, बिस्तर, बिछावत सब कुछ है। वह राजा जनक के कुल की संतान नहीं है। इसी बात को राजा और बाकी सभी उससे छुपाते थे। मगर सीता को राजा जनक ने इतने लाड प्यार से पाला-पोसा कि किसी को विश्वास ही नहीं हो सकता कि सीता भूमिजा है। समस्त दिव्य-सुख उसके लिए उपलब्ध थे। उसे सभी जानकी ही कहते थे। इतना सब कुछ मिलने के बाद भी उसके जन्म की असलीयत का पता उसे धाई दारा लग चुका था।

नये युग की आकांक्षिणी :-

सीता मुनिवर वाल्मीकि के आश्रम में बैठी थी। रघुकुल की एकपक्षीय मर्यादा, एक न्याय करनेवाले श्रीराम तथा रघुकुल के प्रति उसके मन में आक्रोश पैदा होता है। अतः वह ऐसे युग परिवर्तन की कल्पना करने लगती है, जहाँ आडंबर, प्रवाद और झूठी प्रतिष्ठा को कहीं जगह नहीं मिलेगी। जब सभी सच बोलेंगे, झूठ मोम की तरह गल जायेगा। सभी को सहज सुलभ न्याय मिलेगा।

हर कोई स्वतः अनुशासनबध्द रहेगा। राजा अफवाहों पर ध्यान न देंगे। जन-जीवन में ग्लानि नहीं होगी। नर-नारी दोनों के लिए मर्यादा, न्याय विद्या, बुध्दि, विवेक समान होंगे। शासक सही जाँच पडताल के बाद ही किसी को दोषी सिध्द होने के बाद सजा दें। घर-घर में सोना-चाँदी, अन्न-वस्त्र आदि सब कुछ हो। साथ ही प्रभुता तथा यौवन हो मगर जन-मन को पहले ज्ञान का दीपक चाहिए। ऐसा युग परिवर्तन कब होगा।

भूमिजा :-

जब अश्वमेघ के घोडे को लव-कुश रोकते है और राम को सेना के साथ घनघोर युध्द करते है। राम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न सभी उनके सामने तीर चलाने में असमर्थ रहते हैं। तब मुनि वाल्मीकि ने उनका परिचय राम को दिया तथा निष्कलंक सीता को भी अपनाने को कहा। वे सीता को लेकर नगर आए, राम ने प्रजा की राय ली। सभी इससे सहमत थे किंतु कुछ ऐसे भी थे जो चुप्पी साधे हुए थे। राम और सीता दोनों ने लक्ष्य किया। सीता का हृदय व्यथा से टूक-टूक हो गया। उनके मुख से शब्द निकला - हे धरती माँ। अब और अधिक कष्ट नहीं सहा जाता। लोगों को देखते-देखते सीता के पैरों के नीचे की धरती में दरार पड़ गयी और वह उसमें समा गयीं।

इस प्रकार कविवर नागार्जुन ने सीता को आदर्श पत्नी तथा माता, स्वाभिमानी, न्याय की पक्षधर, नये युग की आकांक्षिणी भूमिजा के रूप में बडी कुशलता से चित्रित किया है। निस्संदेह "भूमिजा" खंडकाव्य में सीता की महिमा गाने में कवि का अद्भुत सफलता मिली है।

2. राम :-

वाल्मीकि के अनुसार राम त्रेता युग में कौशल्या के गर्भ से उत्पन्न अयोध्या का राजा दशरथ के बडे पुत्र थे। उन्हें भगवान विष्णु का सातवाँ अवतार माना गया है और सीता को लक्ष्मी का। वशिष्ठ मुनि की देखरेख में इन्होंने शिक्षा

पायी थी। बाल्यावस्था में ही इन्होंने अनेक राक्षसों को मारा था। इसके पश्चात वे विश्वमित्र तथा अनुज लक्ष्मण के साथ जनकपुर गये, वहाँ शिवजी का धनुष तोड सीता से ब्याह किया।

"भूमिजा" खंडकाव्य में श्रीराम एक मर्यादा पुरूषोत्तम, शूरवीर, प्रजाहितैषी, लोकधर्मी, समाज उध्दारक के रूप में उपस्थित होते हैं।

शूर-वीर :-

महर्षि विश्वामित्र वन में महायज्ञ कर रहे थे। वहाँ के राक्षसों ने बडा उत्पात मचाया था। उनसे रक्षा के लिए उन्होने राजा दशरथ से राम को माँगा। राजा दशरथ ने गुरूवर का आदेश मानकर राम-लक्ष्मण दोनों को उनके साथ भेज दिया। वन में राम ने अपनी धर्नुविद्या के बल पर बडे-बडे राक्षस तथा ताड़का राक्षसी को मारा। उन्हीं के कारण विश्वामित्र अपना महायज्ञ सफलतापूर्वक कर सके।

समाज उध्दारक :-

जब श्रीराम गुरू वाल्मीकि तथा लक्ष्मण के साथ महायज्ञ के बाद जंगल से जा रहे थे। तो मार्ग में मुनिवर गौतम ऋषि का आश्रम मिला। गुरूवर आसन मारे ध्यान में डूबे थे। अतः उन्हें प्रणाम कर आगे बढे तो देखा एक झोपडी अस्त-वस्त पडी है, सूनापन छाया हुआ है। तभी उनका ध्यान एक पाषाणी पर जाता है। पाषाणी को देखकर राम-लक्ष्मण चौंकते है। नारी जैसे प्रतिमा पथराई सी जमीन पर पडी थी। राम ने उसके सिर से लेकर तलवे तक अंग-अंग कर स्नेह से हाथ फेरा तो प्रतिमा की आँखे खुली और वह सजीव सुंदर नारी में परिवर्तित हो गयी। वह गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या थी, जो उन्ही से शापित, इस अवस्था में जी रही थी। राम ने उसका उध्दार किया।

प्रजाहितैषी तथा लोकधर्मी :-

श्रीराम लंका विजय तथा चौदह वर्ष वनवास के बाद अयोध्या आकर राजा बनते हैं। उन्हों ने अयोध्या को एक आदर्श राज्य बनाया। जब श्रीराम ने अहल्या का उद्धार किया था तब उन्होंने प्रतिज्ञा कि वे अहल्या को याद रखते हुए नारी के प्रति कभी भी क्रूर नहीं होंगे और न दूसरा विवाह ही करेंगे। एक पत्नीव्रत पर आरूढ रहेंगे जो सैकडों कमनीय फूल चढाने के लिए लाये जायेंगे, उनका स्पर्श तक नही करेंगे। फूल तो फूल है। धरती माता के श्रृंगार के लिए खिलते हैं। अपने पेडों से लगे हुए ही सहज सुंदर लगते हैं। राम आगे प्रण करते हैं कि वे अपने यहाँ षोडशियों का मेला नहीं लगने देंगे। खरीदी हुई दासी तक का अपमान नहीं करेंगे। ऐसा विश्वास दिलाते हुए जब मुनि पत्नी के दोनो पाँव छूते है तो अहल्या का मातृत्व उमड पडता है। अपने इस अटल विश्वास पर राम अंत तक बंधे रहे।

राजधर्म का पालन :-

रामचंद्र बडी निष्ठा से प्रजा के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करने लगे। उनके राजकाल में सर्वत्र सुख-शांति फैली हुई थी।

परंतु रामचंद्र भी आखिर आदमी ही थे। अपनी प्रजा की आलोचना से वह भी नहीं बचे। सबका मुँह चुप करना किसी के लिए भी असंभव है।

अपने राज्य की सभी जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होंने गुप्त दूत नियुक्त किये थे। एक दूत से जब उन्हे पता चला कि प्रजा वर्ग में एक धोबी ने सीता के चरित्र पर उंगली उठायी है तो वे गम्भीर चिंता में निमग्न हो गए। रामचंद्र मर्यादा पुरूषोत्तम थे। उन्हें इस तरह की एक-एक बात का ख्याल रहता था। अपना कुल कलंकित न हो, इसका ध्यान उन्हें सदैव बना रहता। आज तक कठिन कर्तव्य के पालन में वे अग्रणी रहे। तो, अब क्या अपने कर्तव्य का पालन वे नहीं करेंगे?

रामचंद्र ने सीता के परित्याग का निश्चय किया। उन्होंने लक्ष्मणर् को आज्ञा दी और लक्ष्मण ने सीता को तमसा नदी के किनारे छोड दिया। इसतरह राम ने प्रजाहित तथा लोकधर्म और राजधर्म के लिए सीता का त्याग कर एक आदर्श राजा के रूप में इतिहास में अमर मान्यता हासिल की।

इसप्रकार कवि नागार्जुन ने यहाँ श्रीराम को एक आदर्श राजा, शूरवीर, लोकधर्मी, समाज उध्दारक के रूप में बडी सफलतापूर्वक चित्रित किया है। यहाँ के राम एकपक्षीय मर्यादा और झूठी प्रतिष्ठा के अनुशासक रूप में वर्णित हैं। राम प्रवाद एवं अफवाहों पर विश्वास करते है मगर सच्चाई की जाँच पडताल किये बना बेचारी सीता से गर्भासिन्न अवस्था में पुनःवनगमन करवाते है। राम के व्यक्तित्व के इसी कमजोर पक्ष का सही चित्रण करने में नागार्जुनजी को अच्छी सफलता मिली है।

3· **अहल्या :-**

मुदगल की पुत्री गौतम ऋषि की पत्नी तथा शतानंद की माता। इन्हें गौतमी भी कहा गया है। इनके भाई का नाम दिवोदास था। ब्रहम पुराण के अनुसार बहमा ने अहल्या की रचना की थी और उसे गौतम को दे दिया था।

श्रीराम ने ही अहल्या को उध्दार किया था। इसके पिछे एक बडी ही दिलचस्प कहानी है। वह कुछ इसतरह -

गौतम ऋषिकी पत्नी अहल्या जो बहुत ही सुंदर थी। उसके सौंदर्य पर आसक्त साक्षात इंद्र एक दिन गौतम ऋषि के भेस में आकर अहल्या का सर्वस्व लुटते है। जब इसका पता गौतम ऋषि को लगता है तो क्रोध से वे अहल्या को व्यभिचारिनी, कुलटा कहते है। क्रोध में आकर गौतम ऋषि ने अहल्या को शाप दे दिया कि वह पाषाणी बन जायेगी। वस्तुतः अहल्या ने सपने में भी अन्य पुरूष के बारे में नहीं सोचा था। फिर भी गौतम मुनि के शाप के बाद वह पाषाणी बनकर जमीन पर व्यर्थ सी पडी थी।

इधर महर्षि विश्वामित्र ने महायज्ञ को सफलतापूर्वक पूर्ण किया। वे राम-लक्ष्मण को लेकर निकल पडे। जंगल के सुंदर प्राकृतिक दृश्यो को देखते देखते वे आगे बढ़ रहे थे कि उनका ध्यान मुनि गौतम ऋषि पर पड़ा। मुनिवर ध्यान धारणा में लीन थे अंतः राम-लक्ष्मण ने उन्हें प्रणाम किया और आगे बढ़े। देखा तो दंग रह गये। आश्रम सूना और कुटिया अस्त-व्यस्त है। थोडी ही दूरी पर एक नारी प्रतिमा पथराई सी जमीन पर पडी देखकर दोनों भाई वही ठिठक गये। विश्वामित्र का संकेत पाकर राम और लक्ष्मण दोनो पाषाणी को परिचर्या में जुट पड़े।

तलवे से लेकर माथा, माथे से लेकर तलवा। अहल्या के संपूर्ण शरीर पर न जाने रामचंद्र कब तक अपना हाथ फिराते रहे। सुध-बुध खोकर वह अभिशापित नारी को सेवाशुश्रुषा में निमग्न हो गए। बडी देर बाद पाषाणी में चेतना का संचार हुआ। उसके होंठ फडकने लगे। गड्डे मे धँसी आँखे मे टिमटिमाहट पैदा हुई। सूखी पथराई नसों में स्पंदन लक्षित होने लगा। अहल्या श्रीराम के कर पल्लवों का स्पर्श पाकर फिर जीवित हो उठी। प्रभू रामचंद्र ने अहल्या का उध्दार किया।

राम ने अपना परिचय दिया तथा अहल्या को विश्वास दिलाया कि इसमें उस बेचारी का कोई दोष नहीं। अतः वह बेकसूर है, पावन है। राम ने श्रध्दा से उसकी प्रदक्षिणा की तथा भक्ति से झुककर प्रणाम किया। अहल्या ने राम से कहा कि वे अवध के राज बनेंगे। जब श्रीराम राजा बनेंगे तब वे अहल्या को याद नहीं करेंगे ऐसी आशंका भी अहल्या व्यक्त करती है।

यह सुनकर राम दाँतो तले जीभ दबा लेते हैं। हाथों से दोनों कान छूते हुए संकल्प करते हैं कि वे अहल्या को याद रखते हुए नारी के प्रति कभी भी क्रूर नहीं होंगे। न तो दुसरा विवाह करेंगे। एक पत्नीव्रत का पालन करेंगे ऐसा विश्वास दिलात हुए, जब राम मुनि पत्नी के दोनो पाँव छूते है तो अहल्या का मातृत्व उमड आता है। वह दोनो भाईयों को बहुत-बहुत शुभाशिर्वाद देती है।

श्रीराम के उध्दार से अहल्या कृतार्थ हा जाती है। कृतज्ञता से गद्गद होती हुई वह रामजी को अपना भाई मानती है। वह कहती है - जब तक राम जैसे भाई अभिशप्तों के दुःख हरने के लिए पृथ्वी पर हैं, कष्ट नहीं होंगे। वह बार-बार आशोर्वाद देती रही, आभार प्रकट करती रही कि धन्य हैं राम जिनके कर-कमलों के स्पर्श ने पत्थर में जान डाल दी। उपेक्षित निर्जन कुटिया में टूटे दीपक की सुखी बाती की तरह जी रही पाषाणी अहल्या को, अपने पुरे स्नेह तथा अवतारमयी क्रिया-कलापों ने फिर मूर्तिमान बनानेवाले श्रीराम की यह अद्भुत कहानी सुनकर समुचा संसार पुलकित हो उठेगा। पुलकित रोम-रोम से अहल्या राम के आगे साभार झुक जाती है -

"जय जय हे कौशल्यानंदन राम
पाषाणी करती है तुम्हे प्रणाम...."[1]

इस तरह भूमिजा में अहल्या हमारे समक्ष एक त्यागमयी, तपस्विनी, अभिशप्त एवं नारी के रूप में आती है।

अहल्या का उध्दार कहाँ हुआ था, इस संबंध में दोनों स्थानों का जिक्र होता है। एक स्थान है वाराणसी - छपरा रेलवे लाईन पर रिविलगंज (बिहार) स्टेशन, जिसका पुराना नाम गोदना है, यहाँ गौतम ऋषि का आश्रम था। कहा जाता है कि यहाँ अहल्या का उध्दार हुआ था।

दुसरी जगह है बिहार के दरभंगा जिलान्तर्गत कमतौल रेलवे स्टेशन। इसके पास अहल्या स्थान है। मान्यतानुसार गौतम ऋषि का आश्रम यहाँ था और अहल्या उध्दार यहाँ हुआ था।

4. **लक्ष्मण :-**

दशरथ के चार पुत्रों मे से दूसरे का नाम लक्ष्मण है जो सुमित्रा से उत्पन्न हुए थे। जब राम का विवाह सीता से हुआ तभी इनका भी विवाह सीरध्वज

जनक की औरस जात पुत्री उर्मिला के साथ हुआ था। वे स्वभाव से बडे भक्त थे। वे अपने अग्रज को बहुत चाहते थे। सदैव उनके पीछे छाया की भाँति रहते थे।

लक्ष्मण अग्रज श्रीरामजी की सेवा करने में अपने आप को धन्य समझते थे। कैकयी के राजहठ के कारण प्रभू रामचंद्रजी को चौदह वर्ष तक वनवास काल में जाना पडा तब लक्ष्मण ने राजकीय सुखों को त्यागकर वनवास काल में भी बडे भाई राम का साथ दिया था।

महर्षि विश्वामित्र ने महायज्ञ में बाधा डालने वाले राक्षसों का नाश करने के लिए राजा दशरथ से राजकुमार रामचंद्र को माँगा था। बडे सोचविचार के बाद कुलगुरू महामुनि वशिष्ठ के कहनेपर राम और लक्ष्मण दोनों राजकुमारों को राजा दशरथ ने महर्षि विश्वामित्र के साथ भेज दिया। रामजी और लक्ष्मण सीमा से दूर वन-प्रांतर में महर्षि विश्वामित्र से शिक्षा ग्रहण करते हुए मुक्त विचरण करते हैं। सरयू नदी के किनारे विश्वामित्र ने कुमारों को दो मंत्र बताए। बला और अतिबला। इन मन्त्रों में विशेषता यह भी कि युध्द में न तो थकावट मालूम होती और न फुर्त्ति की कमी।

महर्षि विश्वामित्र की अनुपस्थिति में दुष्टों ने यज्ञभूमि पर तांडव मचा रखा था। राम और लक्ष्मण यह सब देखकर बडे दुखी हुए। राम तो बडे विनयशील होकर देख रहे थे लेकिन क्रोध के आवेश में लक्ष्मण के होंठ फडकने लगे। फिर नये सिरे से मुनि ने यज्ञ का आयोजन किया। राजा दशरथ के दोनो कुमार रात-दिन उस अनुष्ठान की निगरानी करने लगे। अपनी माँ के मर जाने से मारीच और सुबाहू दोनों ही राक्षस बेहद क्रोधित हो रहे थे। परंतु राम और लक्ष्मण ने अबकी बार उनके सारे मनोरथों को खंडित कर दिया। महर्षि विश्वामित्र स्वयं भी अपने पहले जीवन में बहुत बडे लडाकू मशहूर तीरन्दाज़ थे। दोनों कुमारों ने उनसे कई बाते सीख ली थी। नतीजा यह हुआ कि यज्ञ में विघ्न पैदा करने

वाले सभी राक्षस दोनों राजकुमारों द्वारा एक एक कर मार डाले गए। विश्वामित्र ने अपने संकल्पित यज्ञ को विधिपूर्वक सम्पादित किया। अन्त में छाती से लगाकर राम और लक्ष्मण को बधाई दी। आशीर्वादों का अन्त न था।

महर्षि विश्वामित्र ने ही अहल्या की दर्दभरी कथा दोनो कुमारों को सुनायी। बाद में उन्हीं का संकेत पाकर बरसों से अभिशापित अहल्या का उध्दार श्रीराम ने किया। अपने अग्रज के इस महनिय काम से लक्ष्मण का माथा उपर उठ गया।

राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता का स्वयंवर रचा था। जिसमें शिवजी की कमान को उठा लेना और उस पर चिल्ला चढ़ाना कोई खेल नही, बडा की कठिन काम था। जब सभी राजा कोशिश करके थक गए तो राजा जनक को क्रोध आया और उन्हों ने उठकर राजाओं को फटकारा। राजा जनक की फटकार सुनकर राजाओं की आँखे नीचे झुक गई। राम गंभीर हो गये थे लेकिन लक्ष्मण को रहा न गया। उन्होंने अपने गुरू एवं अग्रज की आज्ञा हो तो धनुष को फूँक मारकर तिनके की तरह उडा देना चाहा। लक्ष्मण की यह ललकार राजांओ के लिए चुनौती थी और जनक के लिए खुला ऐलान था।

चौदह वर्ष के पश्चात राम, लक्ष्मण और सीता फिर अयोध्या आए। रामचंद्र का अभिषेक संपन्न हुआ और लक्ष्मण ने अपने आप को अपने अग्रज की सेवा में लगा दिया। सब कुछ कुशल मंगल सा चल रहा था। लेकिन तभी वह प्रसंग आया कि रामचंद्र ने सीता के परित्याग का निश्चत किया। राम ने लक्ष्मण को आज्ञा दी कि वे सीता को जाकर तमसा नदी के किनारे छोड आए।

लक्ष्मण सीता को लेकर वन की ओर चले। वह गर्भिणी थी। फिर भी लक्ष्मण उसे जंगल में छोडने जा रहे थे। लक्ष्मण का कलेजा फटा जा रहा था। परंतु भाई की आज्ञा थी, और आज्ञा-पालन तो होना ही चाहिए। छोटे

बडों का अनुशासन मानें। रघुकुल की इस रीति को भला लक्ष्मण ही क्यो तोडेंगे? इससे पहले भी सीता की अग्निपरीक्षा के समय राम की आज्ञा से लक्ष्मण ने ही चिता रचाई थी। इसी तरह लांछित सीता को राम की आज्ञा से लक्ष्मण ने ही तपोवन पहुँचाया था।

लक्ष्मण बहुत ही तेजस्वी, वीर, शुध्द चरित्र के थे। वे बडे ही आज्ञाकारी भाई थे। आज भी लोग राम-लक्ष्मण जैसे भाइयों की दुहाई देते हैं। पुराणानुसार लक्ष्मण शेषनाग के अवतार माने जाते हैं।

5· **कुश और लव :-**

कुश और लव राम तथा सीता के जुडवाँ बेटे थे। लोक अपवाद के भय से राम ने सीता को गर्भावस्था में ही वन में भेज दिया था। कुश और समिधा के लिए महर्षि वाल्मीकि उस वन में आए तो उन्होंने सीता को देखा। उन्होंने सीता को अपने आश्रम में शरण दी। अपनी कन्या की भाँति मुनि सीता की देखरेख कर रहे थे। थोडे दिनों बाद सीता को दो जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए। वाल्मीकि ने उनका नामकरण किया लव और कुश। दोनों बच्चे वही पलने लगे।

लव और कुश बाधाओं से भरे जंगली बीहड़ पथ पर घूमते रहते है। दोनो वज्र के समान मजबूत है। प्रकृति के प्यारे है। प्रकृति को ही प्यार करते है। इनके लिए साकेत अयोध्या का राजकीय वैभव कृत्रिम है। बाघ के बच्चों से दोस्ती है। तालाब और नदी किनारे का क्षेत्र मानों इनका ही राज्य है। जंगली पहाडी लोग इन्हें चढावा दे जाते है। इनका धनुष चलाना देखकर लोग दंग रह जाते है। अद्भुत वाक्पटुता की वजह से दूर-दूर तक लव और कुश की नाम फैल गया है। सीता माता सोच रही है कि अगर आज यहाँ गुरूवर विश्वामित्र होते, तो उन्हें देखकर उनमें एक बार फिर से उत्साह भर जाता और फिर से इतिहास ताजा होता।

लव-कुश शुरू से ही बडे तेज थे। लव-कुश अभी दुध पीते शिशु ही थे तभी सीता की छाती सुखने लगी। स्नेह-स्त्रोत सूख गया था। फिर भी तापसियों ने इतने प्यार से इन दोनों को पाल-पोसकर बडा कर दिया। बचपन में ही उन्हें पंचतत्व बोध प्राप्त हो गया था।

महर्षि वाल्मीकि ने लव-कुश को अपना काव्य कंठस्थ करा दिया। दोनों बटुक जब रामायण का गान करते तो पशु-पक्षी तक मुग्ध होकर सुनते रहते। उनको पता नहीं था कि जिनके चरित्र का गान इन श्लोकों द्वारा वे करते फिरते है, वह श्री रामचंद्र आखिर कौन है? अपने चरित्र गायक की वीरता, उनकी साहस की बाते, उनका त्याग और तपस्या, यह सभी कुछ दोनों को बडा ही अद्भुत लगता।

दोनो बच्चे बडे होते गए, समय बितता गया। मुनि ने अस्त्र-शस्त्र चलाने की विधा में भी उन कुमारों को निपुण बना दिया। काव्य का गान करना, तोर चलाने का अभ्यास, विधा अध्ययन और ब्रहमचर्य यही था कुमारों का जोवन। उन्हें देखकर सीता को किशोर राम की याद आती है। उन्हों ने अपने अतीत की घटनाओं को लव और कुश से छिपा रखा था।

एक दिन दोनों कुमारों ने एक सजा-सजाया सुंदर घोडा देखा। वह बिना सवार का था। परंतु उसके पीछे अस्त्र-शस्त्र से सज्जित काफी सैनिक चल रहे थे। घोडे के कान साँवले और लंबे थे। सिर पर सोने का पट्टा बँधा था। गले में रंगीन रेशम थी।

ऐसा घोडा उन्होंने आज तक देखा नहीं था। लव-कुश घोडे को पकड लाये और आश्रम मे बाँध दिया। सैनिकों ने घोडे को छिनना चाहा, परंतु बहादुर कुमारो के आगे उनकी एक न चली।

वह अश्वमेघ का घोडा था उसके पीछे राज्य की समूची शक्ति थी। शत्रुघ्न आए, भरत आए, लक्ष्मण आए और अंत में राम को स्वयं आना पड़ा।

लव और कुश धुवाँधार तीर चला रहे थे। घोडे की बात नहीं थी, बात थी आन की। वह घोडा सब जगह से घूम आया था, किसी की भी उसे छेडने तक की हिम्मत नहीं हुई थी। लव-कुश की इस बहादुरी को अयोध्या के सैनिकों ने बालहठ समझा। पीछे जब गुत्थमगुत्था हुआ, तो उन्होंने सोचा, बच्चों का रूप धरकर इंद्र रामचंद्र का मुकाबला करने आये हैं। आज तक राम-लक्ष्मण को तीर चलाने में असफलता नहीं हुई थी, परंतु इन छोकरों ने उन्हें परास्त कर दिया। खैर, मुनि वाल्मीकि के बचाव करने के कारण मामला सुलझ गया। घोडा वापस आया। अश्वमेघ यज्ञ पूरा हुआ।

लव-कुश दोनों कुमारों को साथ लेकर वाल्मीकि मन ही मन प्रसन्न हुए। उधर यज्ञ हो रहा था, इधर लोगों को लव और कुश रामायण सुनाते फिर रहे थे। गन्धर्व की सुरीली आवाज में वीणा के सहारे वे दोनो राम की गुण-गाथा गा रहे थे - ताडका वध, अहल्या उध्दार, धनुर्भंग, अभिषेक की तैयारी, वनगमन, पंचवटी में सीता-हरण, सुग्रीव-मैत्री, हनुमान-लंघन, अशोक वाटिका में सीता, राम-रावण युध्द, प्रत्यावर्तन अयोध्या में अभिषेक और सीता का वनवास।

रामचरित्र का वह कवित्वमय वर्णन सुनकर अयोध्या में सभी मुग्ध हो गये। राम को तो मूर्च्छा आ गई।

होश आने पर राम ने दोनों ऋषि कुमारों को नजदीक बुलाकर पूछा क्या नाम है तुम्हारा?

कुश और लव - उत्तर मिला।

पिता का नाम?

....

क्यो, पिता का नाम नहीं जानते हो?

जी, यह नहीं बताया गया है। हा, हमारी माँ का नाम सीता है।

सीता?

राम ने दोनो तरूणों को खींचकर अपनी छाती से लगा लिया। सीता के बच्चे है। उस सीता के, जिसे मैंने जंगल मे खदेड दिया था?

बिजली की भाँति यह समाचार अयोध्या में फैल गया। कुश और लव को देखने के लिए सारा नगर उमड पडा। लव और कुश भी अपने पितृत्व को पहचान कर धन्य धन्य हो उठे।

सभी यही कह रहे थे कि जैसे बाप वैसे पूत - राम भी बचपन में ऐंसे ही लगते थे। यज्ञ समाप्त हो चुका था।

आखिरकर वह प्रसंग भी आया जग सीता धरती माता की गोद में हमेशा के लिए समायी। हाय-हाय मच गयी। कुश और लव माँ माँ कहकर रोने लगे।

सीता द्वारा भूमि-समाधि लेने के उपरान्त जब राम ने वानप्रस्थ का निश्चय कर, भरत का राज्याभिषेक करना चाहा तो भरत तैयार नहीं हुए। अतः दक्षिण कोसल प्रदेश में कुश तथा उत्तर कोसल में लव का अभिषेक किया गया।

6· **वाल्मीकि :-**

भृगुवंश में उत्पन्न तथा प्रचेता के वंशज मुनि वाल्मीकि आदि कवि माने जाते है। तमसा नदी (आधुनिक टौंस) के तट पर इनका आश्रम था। दूसरी मान्यता के अनूसार बिहार के चम्पारण जिलान्तर्गत भैंसालोटन ग्राम में भी इनका आश्रम माना गया है। इसका आधुनिक घोषित नाम वाल्मीकि नगर है। लोकापवादक् सुन राम ने जब सीता को वनवास दे दिया था। उस समय वाल्मीकि ने उन्हें अपने आश्रम में रखा था। वही कुश और लव ने जन्म लिया। महर्षि वाल्मीकि ने उनको अपना काव्य कंठस्थ करा दिया। अस्त्र-शस्त्र चलाने की विद्या में भी लव-कुश को निपुण बना दिया। यही कारण था की दोनों ने राम का अश्वमेघ का घोडा बांध दिया था।

सीता के भूमी समाधि के बाद वाल्मीकि अचेत हो गये थे, वे यह सदमा बर्दाश्त नहीं कर सके। वात्सल्य विह्वल बूढे वाल्मीकि जैसे स्मृति शेष के संवाद से राम कथा का उपसंहार करते है।

पहले वे एक डाकू थे। अत्रि ऋषि की कृपा से इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और तेरह वर्ष तक राम नाम जपकर सिध्दि प्राप्त की थी। तेरह वर्षो के बाद जब सप्तर्षि उधर से निकले और इनके ऊपर जमी बाँबी §वल्मीक§ देखी तो वे बोल उठे तुम दीर्घकाल तक वल्मीक में दबे बैठे रहे हो अतः तुम वाल्मीकि नाम से विख्यात हो जाओगे।

नेपाल के त्रिवेणी नामक स्थानपर 14 जनवरी को इनकी जन्म-तिथि मनाई जाती हैं।

7· **विश्वामित्र :-**

पुरूवंशी महाराज गाधि के पुत्र, प्रसिध्द ब्रहमर्षि जो क्षात्रय होते हुए भी अपने तपोबल से ब्रहमर्षि में परिणित हुए थे। पुराणों में इनके संबंध में अनेक कथाएँ भरी पडी है।इनके आश्रम में रावण के अनुसार मारीच और सुबाहु बराबर विघ्न उपस्थित कर यज्ञों को दूषित कर देते थे। अतः विश्वमित्र राम और लक्ष्मण को अयोध्यापति दशरथ से माँग लाये।

अपनी इच्छापूर्ति के लिए जाते वक्त सरयू नदी मिली, जहाँ विश्वामित्र ने दोनों कुमारों को दो मंत्र बताए। बला और अतिबला। इनकी विशेषता यह है कि युध्द में न तो थकावट मालूम होती और न फुर्ति की कमी। तपोवन का इलाका आते ही ताड़का ने अपनी नाक से मनुष्य की गंध महसूस की और तीनों की ओर दौडी। विश्वामित्र का आदेश मानकर दोनों भाइयों ने उसको एक ही तीर में मार दिया। विश्वामित्र को अपार प्रसन्नता हुई। उन्हे अपने सपने पूर्ण होने में तनिक भी विलम्ब नहीं दिखाई दिया।

इधर आश्रम में यज्ञ की वेदी तहस-नहस हो गयी थी। अग्नीकुंड बुरे हाल में था और मंडप टूटा पडा था। यह देखकर दोनों भाइयों को बडा दुःख हुआ। फिर यज्ञ का आयोजन किया गया। अपनी माँ के मारे जाने से मारीच और सुबाहु दोनों ही राक्षस बेहद क्रोधित हो रहे थे। वे फिर उपद्रव करने लगे। परंतु राम और लक्ष्मण ने सभी राक्षसों को एक एक करके मार डाला। मारीच घायल होकर भाग खडा हुआ।

महर्षि विश्वामित्र स्वयं अपने पहले जीवन में बहुत बडे लडाकू, मशहूर , तीरंदाज थे। राम को उन्होंने तीरंदाजी के कई अचूक गुण बता दिए थे। लक्ष्मण ने भी कई बातें उनसे सीख ली थी। इसी कारण विश्वामित्र अपने संकल्पित यज्ञ को विधिपूर्वक संपादित कर पाये।

विश्वामित्र के आदेश से राम ने पत्थर मे जान डाल दी और अहल्या का उध्दार किया था। महर्षि को विश्वास हो चुका था कि राम काई साधारण राजकुमार नहीं थे। इसीलिए वे ये जानते थे कि सीता के योग्य पति रामचंद्र ही हो सकते हैं। राक्षसों का संहार हो चुकने पर तो उनका यह विश्वास ओर दृढ तथा निश्चित हो गया था। स्वयंवर की सूचना मिलते ही विश्वामित्र ने अवध के उन दो राजकुमारों के साथ मिथिला के स्वयंवर में भाग लिया। उधर स्वयंवर की तैयारियाँ चल रही थीं, इधर विश्वामित्र अपने नवयुवक शिष्यों को मिथिला के विशिष्ट स्थानों का परिदर्शन करा रहे थे।

स्वयंवर में विश्वामित्र ने अवसर देखकर राम को धनुष्य उठाने का आदेश और आशिर्वाद दिया। गुरू का आदेश मानकर राम ने बिना किसी उद्वेग के अहिस्ता अहिस्ता शिवजी का वह अडिग धुनष उठा लिया। राम और सीता का विवाह वहीं सपन्न हो गया। राम के अभिषेक में विश्वामित्र स्वयं उन्हे आशिर्वाद देने अयोध्या आए थे।

महर्षि विश्वामित्र को पूरा जीवन इसी तरह से परोपकार मे व्यतीत हुआ।

8· **गौतम :-**

राजा जनक के पुरोहित शतानंद के पिता का नाम है गौतम इन्हें गोतम ओर गौतम दोनों ही कहा गया है। इनकी पत्नी का नाम अहल्या तथा पुत्री का नाम विजया था।

ब्रह्मा ने अमित प्रजा की रचना के उपरांत एक अतीव सुंदरी की रचना की। उसकी रचना में विरूपता नहीं थी, अतः वह अहल्या कहलायी। ब्रह्मा ने उसका विवाह गौतम मुनि से कर दिया। इन्द्र भी इसी सुंदरी से विवाह के लिए इच्छुक थे। कामाधीन इन्द्र ने गौतम का रूप धारण करके उसके साथ विहार किया। मुनि गौतम ने क्रुध्द होकर इन्द्र को शाप दिया - "हे इन्द्र, तु ने पराई स्त्री से भोग करने की प्रथा चलायी हैं, अतः यह मनुष्य-लोक में फैल जायेगी। तुने जघन्य काम किया है, इसलिए तू युध्द में परास्त होगा और बन्दी बनकर शत्रु के पास पहुँचेगा। " गौतम ने अहल्या को भी शाप दिया कि उसका रूप प्रजा में बँट जाय। वह आश्रम के पास ही नष्ट हो जाय, क्योंकि उसके साथ धोखे से संभोग किया गया था। अतः अहल्या को उन्होंने इतनी छूट दी थी कि जब विष्णु राम के रूप में विश्वामित्र की आज्ञा से उसका स्पर्श करेंगे तो वह निष्पाप हो जायेगी।

राम और लक्ष्मण भी मुनिवर गौतम के दर्शन करके तृप्त हो जाते है।

9· **त्रिजटा :-**

रावण की बहन का नाम है त्रिजटा। त्रिजटा अशोक वाटिका में सीता के साथ आत्मीय भाव से जुड गई थी।

रावण ने सीता को अशोक वाटिका में रख दिया था। वहाँ अनेक राक्षसियाँ नियुक्त थी, जो सीता को डरा-धमकाकर रावण की सहचरी बनाना चाहती थी। उन्ही में से एक त्रिजटा भी थी, जो सदैव सीता को एकांत में सांत्वना देती रहती थी।

किशोर लव-कुश को तरूण तपस्वी की भाँति देखकर त्रिजटा भ्रम में पड जाती है कि ये है कौन? त्रिजटा ने इन कुमारों को देखा ओर सोचने लगी कि ये बालक इस अफवाह को मिटा कर रहेंगे जिससे उनकी माँ गली जा रही है। जानकी अयोध्या लौट जायेगी। जुडवाँ भाइयों पर दूर्वाक्षत और आशिर्वाद की वर्षा होगी। इनका युवराज की तरह तिलक होगा। आगे चलकर त्रिजटा का यह सोचना बहुत कुछ सच हो जाता है।

त्रिजटा ने सीता को बताया कि रावण उसके साथ अनाचार नहीं करेगा, क्योंकि कामुक रावण ने अपनी पुत्र वधू तुल्य नलकूबर की पत्नी रंभा का स्पर्श किया था। नलकूबर ने उसे शाप दिया। जिसके कारण नारी की इच्छा के बिना रावण उसका स्पर्श नहीं कर पायेगा। त्रिजटा ने यह भी बताया कि राम के हितचिन्तक राक्षस अविंध्य ने उसके माध्यम से संदेश भेजा है कि राम-लक्ष्मण, सुग्रीव के साथ शीघ्र ही रावण से युध्द करने के लिए आ रहे है।

त्रिजटा की ममतापूर्ण सांत्वना से ही सीता अशोक वन में इतने दिनों तक रह पायी। उसने अपने भाई के ना करनेपर भी सदा सीता की सहायता की थी। इसी तरह त्रिजटा राक्षसी होते हुए भी "भूमिजा" में सामान्य मानवों की तरह व्यवहार करती दिखायी देती है।

10· **धन्वन्तरि :-**

देवताओं के वैद्य का नाम है धन्वन्तरि। समुद्र मंथन में लक्ष्मी, चन्द्रमा आदि के साथ उत्पन्न हुए थे।

11· **भगीरथ :-**

सूर्यवंशीय राजा दिलीप के पुत्र। भगीरथ की तपस्या से संतुष्ट होकर ब्रहमा ने उन्हे वर दिया था। जिससे कपिल के शाप से भस्म उनके साठ हजार प्रपितामह गंगाजल से पवित्र होकर स्वर्गवासी हुए थे। बिन्दुसर के तट पर घोर तप करके गंगा को पृथ्वी पर लाये थे भगीरथ। उनके नाम पर गंगा का नाम भागीरथी भी है।

महर्षि विश्वामित्र ने भागीरथ द्वारा लायी गई गंगा की महिमा और इतिहास राम-लक्ष्मण को बताया। अपने पूर्वजों का गुणगान सुनकर राम-लक्ष्मण के कान तृप्त हो गये थे।

12· **सगर :-**

अयोध्या के प्रसिध्द सूर्यवंश के एक राजा सगर थे। राजा बाहु की छोटी रानी के गर्भ से पिता की मृत्यु के पश्चात उत्पन्न हुए थे। बाहु की बडी पत्नो ने गर्भवती छोटी रानी को विष दे दिया था। यह गद् विष के साथ उत्पन्न हुए अतः सगर नाम पडा। इनकी दूसरी रानी सुमति के गर्भ से साठ हजार पुत्र हुए और सबके सब दुष्ट निकले। इन सबको कपिल मुनि ने अपमानित कर शाप से भस्म कर दिया था।

उपसंहार :-

इस तरह "भूमिजा" प्रबंधकाव्य में इन सब चर्चित पात्रों का विषयानुकुल ओर घटना के अनुसार चरित्र उद्घाटित हुआ है। इन चरित्रों का चरित्र उद्घाटित करने में कवि नागार्जुन को अच्छी खासी सफलता मिली है। खासकर भूमिजा सीता का चरित्र अधिक उभरकर सामने आया है। वह एक आदर्श पत्नी तथा लव-कुश की आदर्श माता भी है। स्वाभिमानी, न्याय की पक्षधर तथा नये युग की आकांक्षिणी आदि सीता के चरित्र के विविध पहलुओं पर नागार्जुन ने प्रकाश डाला है।

श्रीराम एक मर्यादा पुरूषोत्तम होते हुए भी सीता के चरित्र के समक्ष बहुत गोण नजर आते है, जिसका कारण है उनका सीता के प्रति एकपक्षीय न्याय।

अहल्या तथा वाल्मीकि का चरित्र चित्रण भी नागार्जुन ने बहुत सफलता के साथ प्रस्तुत किया है।

कुल मिलाकर "भूमिजा" में सीता, राम आदी प्रमुख पात्रों के साथ-साथ अन्य गौण पात्रों के चरित्रांकन में नागार्जुन को अच्छी सफलता मिली है।

<u>संदर्भ :-</u>

1· प्रसंग - 2 - भूमिजा, नागार्जुन, पृ·53